International Journal of Sanskrit Research 2024; 10(1): 168-170

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2024; 10(1): 168-170
© 2024 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 13-12-2023
Accepted: 18-01-2024

डॉ अंजलि
शोधच्छात्रा, पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़, भारत

Corresponding Author:
डॉ अंजलि
शोधच्छात्रा, पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़, भारत

यज्ञ एवं पर्यावरण

डॉ अंजलि

प्रस्तावना

भारतीय संस्कृति यज्ञीय संस्कृति है। यज्ञ शब्द, यजदेवपूजासंगतिकरणदानेषु इस धातु से निष्पन्न हुआ है अर्थात् यज्ञ से अभिप्राय देवों की पूजा, सत्कार, विद्वानों की संगति एवं उत्तम दानादि कर्मों के करने से है। यज्ञ करने का अर्थ मुख्यतया अग्निहोत्र करना समझ लिया जाता है किन्तु वेद की यज्ञीय दृष्टि अत्यन्त व्यापक है। वहाँ अनेक प्रकार के यज्ञों का नामग्रहणपुरस्सर वर्णन प्राप्त होता है। वेदों में यज्ञ की अतिशय महत्ता वर्णित होने से ही अनेक भाष्यकार को 'वेदाः हि यज्ञार्थमभिप्रवृत्ताः'[1] इस उद्घोष के लिए विवश किया। वेद यज्ञ को संसार का आधार मानता है जिसके ऊपर सम्पूर्ण संसार टिका हुआ है। यज्ञ जगत् का प्राण है, जीवनाधार है। यज्ञ इस संसारचक्र की धुरी है।[2]

स्थूलरूप में यज्ञ को द्विधा विभक्त किया जा सकता है–अध्यात्म यज्ञ एवं भौतिक यज्ञ। भौतिक दृष्टि से देखा जाये तो सृष्ट्यादि से सम्पूर्ण जगत् में यज्ञ ही प्रवर्त्तमान है।[3] ऋग्वेद में भी सर्वप्रथम परमेश्वर की यज्ञरूप में ही स्तुति की गयी है।[4] यज्ञ सामान्य जनों एवं विद्वान् वा देवताओं द्वारा भी किया जाता रहा है। वैदिक यज्ञ मूलतः सृष्टि–सम्बद्ध यज्ञ है, पुरुषसूक्त में सम्पूर्ण प्राकृतिक शक्तियों द्वारा विभिन्न पदार्थों के संगतिकरण एवं आदान प्रदान द्वारा सृष्टिनिर्माणरूपी यज्ञ में प्रदत्त सहयोग का वर्णन है।[5]

यज्ञ–विज्ञान–यज्ञ प्रक्रिया एक सर्वथा वैज्ञानिक कर्म है जो मानव अस्तित्व के संरक्षण तथा विश्व–पर्यावरण की सुरक्षा, दोनों के लिए अपरिहार्य है। यज्ञ से आयु, प्राण, ज्योति, आकाश सब शुद्ध होते हैं।[6] स्वामी दयानन्द लिखते हैं–''होम करने से पवन और वर्षा जल की शुद्धि से पृथ्वी के सब पदार्थों की जो अत्यन्त उत्तमता होती है उसी से सब जीवों को परम सुख होता है और ईश्वर उन पर अनुग्रह करता है।''[7]

यज्ञ जहाँ अपनी दुर्गुणनाशिनी शक्ति से सकलपदार्थशोधक होकर सब प्राणियों का उपकारक होता है वहीं यज्ञ की हवियाँ सूक्ष्म बनकर आकाश मार्ग से ऊपर अन्तरिक्ष में जाकर वृष्टि को उत्पन्न करने का कारण भी बनती हैं। न केवल साधारण वृष्टि का, प्रत्युत पौष्टिक एवं रोग–नाशक वृष्टि का भी कारण यज्ञ ही है, इसीलिए सामवेद में कहा गया है–

घृतं पवस्व दारया यज्ञेषु देववीतमः।
अस्मभ्यं वृष्टिमापव।।[8]

अर्थात् हे विद्वान्! तुम यज्ञ में घृत की धाराओं को बहाओ और उनके द्वारा यज्ञ को पवित्रतम बनाओ जिससे हमारे लिए उत्पन्न वृष्टि रोगनाशक एवं बलप्रद हो।

आधुनिक विज्ञान की सम्मति में भी जल स्वतन्त्र तत्व न होकर हाईड्रोजन एवं ऑक्सीजन नाम दो वायुओं के परमाणुओं से मिलकर बनता है। वेद में इन दोनों को क्रमशः मित्र एवं वरुण कहा गया है तद्यथा–

मित्रं हुवे पूतदक्षं वरुणं च रिषादसम्।
धियं घृताचीं साधन्ता।।[9]

अर्थात् जल तत्व का निर्माण करने वाला वैज्ञानिक कहता है कि मैं पदार्थों को पवित्र करने में दक्ष मित्र अर्थात् हाइड्रोजन तथा रोगनाशक एवं स्वास्थ्यप्रद होने से वरणीय वरुण अर्थात् आक्सीजन का आह्वान करता हूँ क्योंकि ये दोनों जल–निर्माण करने वाली विद्या को सिद्ध करने वाली हैं।

निघण्टु वैदिक कोष में घृत जलनामों में पठित है।[10] यजुर्वेद में भी मित्रवरुण को वृष्ट्यधिपति कहा गया है–मित्रावरुणौ त्वा वृष्ट्याऽवताम्।[11]

मित्र एवं वरुण का संगतिकरण (H_2O) करने वाली आहुतियाँ ही अन्तरिक्ष में जाकर उत्तम वृष्टि का कारण बनती हैं। महर्षि मनु ने भी कहा है–

अग्नौ प्रस्ताहुतिः सम्यगादित्यमुपतिष्ठति।
आदित्याज्जायते वृष्टिः वृष्टेरन्नं ततः प्रजा।।[12]

इसके अतिरिक्त श्रीमद्भगवद्गीता में भी यज्ञ द्वारा मेघनिर्माण का वर्णन है–

अन्नाद्भवन्ति भूतानि पर्जन्यादन्नसम्भवः।
यज्ञाद्भवति पर्जन्यो यज्ञः कर्मसमुद्भवः।।[13]

प्राचीन समय में ऋषि विभिन्न वृष्टिकारक सामग्रियों वा औषधियों द्वारा यज्ञ किया करते थे। यज्ञशालाएँ ही उनकी प्रयोगशालाएँ होती थीं जिनमें वे नानाविध प्रयोग करते थे। वेद में यज्ञाग्नि द्वारा जलचक्र पूर्ण होने का बहुत्र वर्णन मिलता है, जैसे–

समानमेतदुदकमुच्चैत्यवचाहभिः।
भूमिं पर्जन्या जिन्वन्ति दिवं जिन्वन्त्यग्नयः।।[14]

मेघोन्नति के लिये भी ऋषि दयानन्द ने यज्ञ करने का प्रकार निर्देश दिया है–''मनुष्यैर्येन मेघेन सर्वस्य पालनं जायते तस्योन्नति वृष्टिप्रवापेन, वनरक्षणेन, होमेन च संसाधनीया। यतः सर्वस्य पालनं सुखेन जायते।''[15]

वृष्ट्यादि की प्रक्रिया के समुचित रूप से चलने से ही वातावरण स्वच्छ रहता है तथा हम स्वस्थ रहते हुए दीर्घायु प्राप्त करते हैं। उक्तमपि–

त्वमग्ने बृहद् वयो दधासि देवदाशुषे।[16]

यज्ञ द्वारा पर्यावरण संरक्षण–छान्दोग्योपनिषद् के अनुसार सबको पवित्र करने से ही यज्ञ का यज्ञत्व है तथा हि–''एष ह वै यज्ञो योऽयं पवते, इदं सर्वं पुनाति। तस्मादेष एव यज्ञः।।''

महर्षि दयानन्द ने ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के 'वेदविषयविचार' प्रकरण में कर्मकाण्ड अर्थात् यज्ञों के प्रयोजन को स्पष्ट करते हुए लिखा है–''अग्निहोत्र से लेकर अश्वमेधपर्यन्त जो यज्ञ किये जाते हैं उनमें भली–भाँति शुद्ध किये सुगन्धित मिष्ट, पुष्टिकारक और रोगनाशक द्रव्यों से आहुतियाँ दी जाती हैं जिससे वायु और वृष्टिजल की शुद्धि हो जाती है। इस कारण यज्ञ सारे जगत् के लिये सुखकारी हो जाता है।''[17]

वायु और जल शुद्ध हों तो सम्पूर्ण मानव जाति सुख, स्वास्थ्य, दीर्घायु प्राप्त कर सकती है। पर्यावरण–प्रदूषण की भयावहता से ही रोगयुक्त संतान प्राप्त होती है। पर्यावरण–शुद्धि से आने वाली सन्तति का जन्म–जीवन भी सुखपूर्ण होता है।

ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश के तृतीय समुल्लास में यज्ञ के दो प्रयोजन बताये हैं–प्रथम जलवायु की शुद्धि तथा द्वितीय वेद की रक्षा। वेदमन्त्रों से यज्ञ करने पर मन्त्र व्यवहार में आते हैं तथा स्मृति का हिस्सा बन जाते हैं। मन्त्रों का अर्थविचार करने से मानसिक प्रदूषण समाप्त होता है वहीं मन्त्रोच्चारण से ध्वनिप्रदूषण समाप्त होता है। अग्नि में डाली गयी आहुतियाँ जल व वायु को शुद्ध करती हैं।

यजुर्वेद में पर्यावरण की शुद्धि के लिये यज्ञ की उपयोगिता यह कहकर बताई गयी है कि एक ओर जहाँ यज्ञ से राक्षस अर्थात् कीटाणु जलकर नष्ट हो जाते हैं वहीं दूसरी ओर दानहीनता की भावना को नष्ट कर परस्पर सहयोग की भावना को बढ़ाता है।[18] वायु शुद्धि ही नहीं यज्ञ द्वारा जल शुद्धि के संकेत भी वेद में मिलते हैं।[19]

अग्नि का प्रज्ज्वलन समिधाओं में होता है। यज्ञ की अग्नि के लिए वेद में सात समिधाओं का उल्लेख है–आम्र, विल्व, पीपल, वट, उदुम्बर, पलाश तथा खदिर।[20] इसके अतिरिक्त चन्दन, गूलर आदि औषधीय गुणयुक्त वृक्षों की समिधाएँ भी यज्ञार्थ प्रयुक्त होती हैं। घृत से समिद्ध अग्नि सभी रोगरूपी शत्रुओं का नाश करता है। तद्यथा–

समिद्धोऽग्निः समिधानो घृतवृद्धो घृताहुतः।
अभीषाद् विश्वाषाऽग्निः सपत्नान् हन्तु ये मम।।[21]

अर्थात् उत्तम अग्नि प्रदीप्त होने पर घृताहुति डालकर सम्यक् जलने लगा है। वह सर्वत्र विजय करके मेरे सब शत्रुओं, दोषों का नाश करे। द्रव्याहुति के समय उन देवों का भी महत्व है जिनको उद्दिष्ट कर अग्नि में आहुति डाली जाती है। 'देव' प्रकृति की शक्तियों का ही रूप हैं। विशिष्ट देवों के लिए विशिष्ट सामग्री से युक्त यज्ञ वातावरण में विशिष्ट प्रभाव डालता है।

इसके अतिरिक्त पात्र–मन्त्र–भावना का भी विशिष्ट महत्व है। यज्ञकुण्ड के उपरी सिरे के लम्बाई–चौड़ाई सोलह अंगुल, पेंदी की लंबाई–चौड़ाई चार अंगुल व गहराई सोलह अंगुल होनी चाहिये। पिरामिड आकार का यज्ञकुण्ड सर्वाधिक उपयोगी माना गया है क्योंकि इसके अन्दर विद्युत् चुम्बकीय शक्तियाँ विद्यमान रहती हैं। पात्रों के लिए 'ताँबा' धातु सर्वोत्तम है। ऐसे पात्र में यज्ञ करके वातावरण शोधन सुचारु रूप से होता है।

यज्ञ में मन्त्रोच्चारण का अत्यन्त महत्व है। नित्य एवं सामर्थ्यवान् शब्दों का समूह ही मन्त्र है। मन्त्रों के उच्चारण से ध्वनिकम्पन वातावरण में प्रसारित होते हैं जिससे ऊर्जा निःसृत होती है।

यज्ञ में उच्च सात्विक भावना का भी बहुत महत्व है। सम्पूर्ण यज्ञ 'इदन्न मम' की भावना से ओतप्रोत है। दुर्भावनापूर्ण यज्ञ अभीष्टसिद्धि नहीं करता। विधिपूर्वक तथा परमार्थभावना से किया गया यज्ञ ही पर्यावरणसंरक्षण में समर्थ है। वस्तुतः यज्ञसंस्कृति भावनात्मक स्तर पर सुधार ला सकती है जिससे बाह्य वातावरण स्वयमेव सुधर सकता है। प्रयोगात्मक रूप में यज्ञसंस्था जल, वायु तथा ध्वनि प्रदूषणों को दूर कर पर्यावरण संरक्षण में योगदान दे सकती है।

श्रीमद्भगवद्गीता में उपदिष्ट है कि तुम लोग दिव्य शक्तियों को उन्नत करो वे इच्छित भोग प्रदान करेंगी।[22] यज्ञ द्वारा जिन दिव्य शक्तियों को उन्नत करने की बात की गई है वे वस्तुतः हमारे पर्यावरण के घटक ही हैं। पृथ्वी–जल–वायु–अग्नि–आकाश, ये पंचतत्व ही दिव्य शक्तियाँ हैं जो यज्ञ द्वारा संशुद्ध एवं पुष्ट होती है फलतः संपूर्ण जैवमण्डल प्रभावित होता है।

यदि सभी प्रतिदिन थोड़ा–थोड़ा यज्ञ करें तो ये मिलकर वायुप्रदूषणों को दूर कर सकेगा। वृक्ष–वनस्पतियों को यज्ञधूम्र इतना प्रभावशाली बना देगा कि बहुत सा प्रदूषण तो ये वृक्ष ही अवशोषित कर लेंगे। वायु शुद्ध होने से वृष्टिजल स्वयमेव शुद्ध हो जायेगा। इसी क्रम में अन्नादि भी स्वतः शुद्ध हो जायेंगे और प्राणी स्वस्थ व आनन्दप्रद जीवन जी सकेंगे।

यज्ञ संसार का श्रेष्ठतम कार्य है। यज्ञ भारतीय संस्कृति के मनीषी ऋषिगणों द्वारा सम्पूर्ण वसुन्धरा को दी गयी अनुपम भेंट है, जिसे सर्वाधिक फलदायी व समग्र पर्यावरण केन्द्र के ठीक बने रहने का आधार माना जा सकता है। यज्ञ हमारी समस्त इष्ट कामनाओं का साधक है अत एव योगिराज श्रीकृष्ण ने गीता में आदेश दिया है–

सहयज्ञाः प्रजाः सृष्ट्वा पुरोवाच प्रजापतिः।
अनेन प्रसविष्यध्वमेष वोऽस्त्विष्ट कामधुके।।[23]

सन्दर्भ

1. वेदांग ज्योतिष श्लोक 3
2. अयं यज्ञो भुवनस्य नाभिः यजु. 23/62
3. यज्ञो बभूव स आ बभूब स प्रजज्ञे स उ वावृधे पुनः० अथर्व 7/5/2
4. अग्निमीठे पुराहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम् ऋ 1/1/1
5. यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ऋ. 10/80/16
6. आयुर्यज्ञेन कल्पतां प्राणो यज्ञेन कल्पतां चक्षुर्यज्ञेन कल्पतां पृष्ठं यज्ञेन कल्पतां यज्ञो यज्ञेन कल्पताम्० यजु. 8/21
7. स्वामी दयानन्द, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका।
8. सामवेद उत्तरार्चिक, अ. 13, ख. 1, मं. 3
9. ऋ. 1/2/7.
10. घृत इति जलनाम, निघण्टु
11. यजुर्वेद–2/17
12. मनुस्मृति 3/76
13. गीता 3/14
14. ऋग्वेद–1/134/51
15. दयानन्द ऋग्भाष्य 5/83/4
16. ऋग्वेद–8/102/1
17. दयानन्द ऋग्वेद भाष्यभूमिका, वेदविषयविचार
18. शु. यजु. 1/7
19. शु. यजु. 1/13
20. यजु. 17/78
21. अथर्व– 13/1/18
22. गीता –3/10–11
23. गीता–3/10